बहु-स्तरीय कक्षाएँ: शिक्षण की एक विशिष्ट कला

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: संजय गुलाटी, सीनियर स्पेशलिस्ट (बहुभाषी शिक्षा), लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली

भूमिका: भारत के स्कूलों में बहु-स्तरीय कक्षाएँ – एक सामान्य सच्चाई

भारत के ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में जब हम किसी प्राथमिक स्कूल के भीतर कदम रखते हैं, तो नजारा अक्सर एक जैसा होता है। एक छोटा सा स्कूल भवन, दो या तीन कमरे, और उन कमरों में बैठे पहली से पांचवीं कक्षा तक के बच्चे। बरामदे में एक शिक्षक बच्चों को कुछ समझा रहे हैं, जबकि दूसरे शिक्षक ऑफिस के काम और दूसरी कक्षाओं को संभालने में व्यस्त हैं।

यह दृश्य किसी कमी या विफलता का संकेत नहीं है, बल्कि यह हमारे देश की शैक्षणिक संरचना की एक हकीकत है। भारत के लगभग 70 से 80 प्रतिशत प्राथमिक स्कूलों में 'बहु-स्तरीय कक्षाएँ' (Multigrade Classrooms) चलती हैं। इसका मतलब है कि एक ही कमरे में अलग-अलग कक्षाओं के बच्चे एक साथ बैठकर पढ़ते हैं और उन्हें एक ही शिक्षक पढ़ाते हैं। हाल ही में **9 राज्यों की 1050 कक्षाओं (कक्षा-1 व कक्षा-2) में किए गए टीचिंग लर्निंग प्रेक्टिसेस सर्वे (TLPS) 2025 की रिपोर्ट के अनुसार लगभग दो-तिहाई कक्षाएँ बहुकक्षीय थीं।**
हमें यह समझना होगा कि बहु-स्तरीय कक्षा कोई अपवाद नहीं है जिसे ठीक करने की जरूरत है। यह एक स्थाई सच्चाई है। जब तक हमारे गाँव छोटे हैं और स्कूलों में बच्चों की संख्या कम है, तब तक एक शिक्षक को एक से अधिक कक्षाएँ एक साथ पढ़ानी ही होंगी। चुनौती यह नहीं है कि हम इस स्थिति को कैसे बदलें, बल्कि चुनौती यह है कि हम इस स्थिति में बच्चों को बेहतर तरीके से कैसे पढ़ाएँ। कक्षा के समय के दौरान बच्चों को अर्थपूर्ण गतिविधियों में किस प्रकार संलग्न करें। TLPS-2025 रिपोर्ट में पाया गया कि कक्षा का लगभग 27% समय बच्चे किसी भी कार्य में संलग्न नहीं होते हैं। जब वे कोई कार्य कर भी रहे होते हैं तो उनका अधिकांश समय बोर्ड से या पुस्तक से देखकर लिखना, या शिक्षक की बातें चुपचाप सुनना जैसे यांत्रिक कार्यों में व्यतीत होता है।

बहु-स्तरीय कक्षा और बहु-स्तरीय शिक्षण क्या है?

सरल शब्दों में कहें तो 'बहु-स्तरीय कक्षा' वह जगह है जहाँ कक्षा 1, 2 और शायद 3 के बच्चे एक ही साथ बैठते हैं। उनके सीखने का स्तर अलग है, उनकी उम्र अलग है और उनकी पाठ्यपुस्तकें भी अलग हैं।
वहीं, 'बहु-स्तरीय शिक्षण' वह कला या तरीका है जिससे शिक्षक इन सभी बच्चों को एक साथ जोड़कर पढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक एक ही विषय (जैसे 'पानी') चुनते हैं। कक्षा 1 के बच्चे पानी से जुड़े शब्द सीखते हैं, कक्षा 2 के बच्चे पानी के उपयोग पर वाक्य लिखते हैं और कक्षा 3 के बच्चे पानी के स्रोतों के बारे में चर्चा करते हैं।

अक्सर हम 'बहु-स्तरीय कक्षा' को एक मजबूरी मान लेते हैं और उसे 'एक-स्तरीय' (Monograde) तरीके से पढ़ाने की कोशिश करते हैं। यहीं पर समस्या शुरू होती है। अगर हम मान लें कि कक्षा अलग है, तो हमें पढ़ाने का तरीका भी बदलना होगा।

बहु-स्तरीय स्थिति क्यों बनती है?

भारत के ग्रामीण और विशेषकर बस्तर जैसे आदिवासी क्षेत्रों में बहु-स्तरीय कक्षाएँ बनने के कई ठोस कारण हैं:

- **शिक्षकों की संख्या:** कई स्कूलों में केवल एक या दो शिक्षक ही तैनात होते हैं। अब दो शिक्षकों के लिए पाँच अलग-अलग कक्षाओं को अलग-अलग कमरों में पढ़ाना शारीरिक रूप से असंभव है।
- **कम नामांकन:** छोटे गाँवों या बसावटों (Hamlets) में बच्चों की कुल संख्या ही 30-40 होती है। ऐसी स्थिति में हर कक्षा के लिए अलग शिक्षक देना प्रशासनिक रूप से कठिन होता है।
- **भौगोलिक स्थिति:** पहाड़ी, जंगली या दूरदराज के इलाकों में स्कूल छोटे होते हैं और वहां बुनियादी ढांचा (Infastructure) सीमित होता है।
- **प्रशासनिक कार्य:** शिक्षकों पर पढ़ाने के अलावा मिड-डे मील, जनगणना और अन्य कागजी कामों का बोझ होता है, जिससे उपलब्ध शिक्षक को कई कक्षाएँ एक साथ देखनी पड़ती हैं।

बहु-स्तरीय शिक्षण में आने वाली चुनौतियाँ

यह स्थिति शिक्षक और छात्र दोनों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण होती है:

शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ	छात्रों के लिए चुनौतियाँ
समय का प्रबंधन: शिक्षक को यह समझ नहीं आता कि वह अपना 40 मिनट का समय कक्षा 1 को दे या कक्षा 2 को।	इंतज़ार का समय: बच्चों को शिक्षक का ध्यान पाने के लिए लंबा इंतज़ार करना पड़ता है।
पाठ योजना (Lesson Planning): हर कक्षा के लिए अलग तैयारी करना और एक ही समय में तीन अलग-अलग पाठ पढ़ाना मानसिक रूप से थका देने वाला होता है।	भ्रम की स्थिति: यदि शिक्षक स्पष्ट रूप से काम नहीं बांटते, तो कक्षा 1 का बच्चा कक्षा 3 की बातें सुनकर भ्रमित हो जाता है।
अनुशासन: जब शिक्षक एक समूह को पढ़ा रहे होते हैं, तो दूसरे समूह के बच्चे खाली बैठकर शोर मचाने लगते हैं।	सीखने में पिछड़ना: शिक्षक अक्सर उन बच्चों पर अधिक ध्यान देते हैं जो तेज हैं या बड़ी कक्षा में हैं, जिससे छोटे बच्चे पीछे छूट जाते हैं।

जब भाषा की बाधा जुड़ जाती है

बस्तर जैसे क्षेत्रों में चुनौती तब और बढ़ जाती है जब बहु-स्तरीय कक्षा के साथ 'बहुभाषी' स्थिति जुड़ती है। कल्पना कीजिए, एक कमरे में गोंडी, हलबी और भतरी बोलने वाले बच्चे एक साथ बैठे हैं, और शिक्षक के हाथ में केवल हिंदी की पाठ्यपुस्तक है। जब बच्चा अपनी घर की भाषा में बात करना चाहता है और स्कूल की किताब उसे अजनबी लगती है, तो वह चुप हो जाता है। बहु-स्तरीय कक्षा में यदि बच्चा डर या संकोच के कारण चुप हो जाए, तो शिक्षक को पता ही नहीं चलता कि वह क्या सीख रहा है। भाषा की यह दीवार बच्चे के आत्मविश्वास को तोड़ देती है। वह कक्षा में मौजूद तो होता है, लेकिन मानसिक रूप से वहां नहीं होता।

जब शिक्षक स्थानीय भाषा और संस्कृति जानते हैं

अगर शिक्षक स्थानीय भाषा (जैसे गोंडी या हलबी) जानते हैं, तो बहु-स्तरीय कक्षा एक जीवंत केंद्र बन जाती है।

- संवाद आसान होता है: शिक्षक बच्चों को निर्देश उनकी अपनी भाषा में दे सकते हैं, जिससे बच्चे तुरंत काम शुरू कर देते हैं।
- अवधारणाओं की समझ: 'पर्यावरण' जैसे कठिन शब्द को समझाने के लिए शिक्षक स्थानीय जंगलों और त्योहारों के उदाहरण देते हैं।
- सहपाठी शिक्षण (Peer Learning): शिक्षक बड़ी कक्षा के बच्चे को कह सकते हैं, "तुम छोटे बच्चों को इस कहानी का मतलब गोंडी में समझाओ।" इससे दोनों का सीखना बेहतर होता है।
- भरोसा: जब शिक्षक बच्चे की भाषा बोलता है, तो बच्चा उसे अपना मानता है और पूछने में हिचकिचाता नहीं है।

जब शिक्षक स्थानीय भाषा और संस्कृति नहीं जानते

अक्सर बाहरी क्षेत्रों से आए शिक्षकों के साथ यह समस्या होती है। वे पढ़ाना तो चाहते हैं, लेकिन भाषा आड़े आ जाती है। ऐसी स्थिति में निराश होने के बजाय कुछ व्यावहारिक तरीके अपनाए जा सकते हैं:

चित्रों का प्रयोग
भाषा के बिना भी चित्र बहुत कुछ कह देते हैं। फ्लैश कार्ड और चार्ट का खूब उपयोग करें।

संकेत और हाव-भाव
क्रियाओं को समझाने के लिए अभिनय (Acting) का सहारा लें।

बच्चे 'शिक्षक' की भूमिका में
कक्षा में उन बच्चों की पहचान करें जो हिंदी और स्थानीय भाषा दोनों जानते हैं। उन्हें 'बाल शिक्षक' की भूमिका दें। वे शिक्षक और अन्य बच्चों के बीच एक पुल का काम करेंगे।

दिनचर्या (Routines)
कक्षा में कुछ तय नियम बना लें। जैसे—हाथ उठाने का मतलब पानी पीना। इससे बार-बार बोलने की जरूरत कम होगी।

बहु-स्तरीय शिक्षण के फायदे

हम अक्सर बहु-स्तरीय कक्षा को केवल एक समस्या के रूप में देखते हैं, लेकिन इसके कई लाभ भी हैं:

- साथ मिलकर सीखना (Peer Learning): छोटे बच्चे बड़ी कक्षा के बच्चों को पढ़ते-लिखते देखकर बहुत जल्दी सीखते हैं। बड़ी कक्षा के बच्चे छोटे बच्चों की मदद करके अपने ज्ञान को पक्का करते हैं।
- स्वतंत्रता का विकास: इन कक्षाओं में बच्चे खुद से काम करना सीखते हैं। वे शिक्षक पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहते।
- सामाजिक जुड़ाव: अलग-अलग उम्र के बच्चे एक परिवार की तरह रहना और एक-दूसरे का सम्मान करना सीखते हैं।
- लचीलापन: यदि कक्षा 3 का कोई बच्चा गणित में कमज़ोर है, तो वह बिना किसी शर्म के कक्षा 2 के समूह के साथ बैठकर बुनियादी बातें सीख सकता है।

बहु-स्तरीय कक्षाओं के लिए उपयोगी शिक्षण रणनीतियाँ

बहु-स्तरीय कक्षा को कुशलता से चलाने के लिए कुछ खास तरीके अपनाए जा सकते हैं:

- **समूह आधारित शिक्षण:** बच्चों को उनकी उम्र के बजाय उनके 'सीखने के स्तर' के आधार पर समूहों में बांटें।
- **गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL):** ऐसी गतिविधियाँ चुनें जिनमें सभी बच्चे शामिल हो सकें। जैसे—मिट्टी से खिलौने बनाना या बगीचे में पौधों को गिनना।
- **रोटेशनल प्लान:** शिक्षक अपना समय बांट लें। 20 मिनट कक्षा 1 के साथ, फिर उन्हें कोई काम देकर अगले 20 मिनट कक्षा 2 के साथ।
- **स्वतंत्र कार्य:** बच्चों के पास हमेशा 'वर्कशीट' या 'लाइब्रेरी की किताबें' होनी चाहिए ताकि जब शिक्षक दूसरे समूह के साथ हों, तो वे खाली न बैठें।
- **स्थानीय सामग्री:** कंकड़, बीज, पत्तियां और स्थानीय कहानियों का उपयोग करें। यह सब स्थानीय परिवेश में उपलब्ध होते हैं और बच्चों के जीवन से जुड़ते हैं।

LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION

बस्तर नींव बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम से उदाहरण

छत्तीसगढ़ के बस्तर में 'नींव' कार्यक्रम ने इस दिशा में एक बेहतरीन उदाहरण पेश किया है। यहाँ बहु-स्तरीय शिक्षण को एक व्यवस्थित रूप दिया गया है। बस्तर के स्कूलों में कक्षा 1 और 2 के बच्चों को एक साथ बैठते हैं। शिक्षक के पास एक विशेष 'टीचिंग प्लान' होता है जिसमें बताया जाता है कि एक ही समय में दोनों कक्षाओं को कैसे संभाला जाए।

इसकी खासियत क्या है?

1

घर की भाषा का उपयोग: बच्चों को उनकी मातृभाषा (गोंडी/हलबी) में बात करने की पूरी आज़ादी दी जाती है।

2

स्तर के अनुसार गतिविधियाँ: अगर शिक्षक 'रंगों' के बारे में पढ़ा रहे हैं, तो कक्षा 1 के बच्चे रंगों को पहचानते हैं, जबकि कक्षा 2 के बच्चे उन रंगों के नाम अपनी भाषा और हिंदी में लिखना सीखते हैं।

3

नियोजित सामग्री: बच्चों को ऐसी कार्यपुस्तिकाएं (Workbooks) दी जाती हैं जो वे शिक्षक की मदद के बिना भी हल कर सकें।

4

समय का नियोजन: शिक्षक कक्षा का समय दोनों कक्षाओं को देते हैं, एक कक्षा के साथ काम करते समय दूसरी कक्षा के बच्चे स्वतंत्र रूप से अर्थपूर्ण कार्यों में लगे रहते हैं।

यह मॉडल साबित करता है कि अगर हमारे पास सही योजना और सामग्री हो, तो बहु-स्तरीय कक्षा में भी बच्चा बहुत अच्छी तरह सीख सकता है।

निष्कर्ष: बहु-स्तरीय कक्षाओं को स्वीकार करने की जरूरत

अब समय आ गया है कि हम बहु-स्तरीय कक्षाओं को एक 'अस्थाई समस्या' मानना बंद करें। हमें यह स्वीकार करना होगा कि देश के एक बड़े हिस्से में यही शिक्षा का मुख्य स्वरूप है।
हमारी सबसे बड़ी गलती यह है कि हम किताबें और ट्रेनिंग इस तरह डिजाइन करते हैं जैसे हर कक्षा के लिए एक अलग कमरा और एक अलग शिक्षक होगा। जब शिक्षक स्कूल पहुँचता है, तो उसे हकीकत कुछ और मिलती है और वह खुद को असहाय महसूस करता है।

हमें क्या करना चाहिए?

- **नया नजरिया:** बहु-स्तरीय शिक्षण को एक 'मजबूरी' नहीं, बल्कि एक 'विशिष्ट शिक्षण कौशल' (Professional Skill) के रूप में देखा जाए।
- **विशेष पाठ्यक्रम:** पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को इस तरह बनाया जाए कि वे बहु-स्तरीय कक्षाओं में आसानी से इस्तेमाल हो सकें।
- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान विशेष रूप से यह सिखाया जाए कि एक साथ दो या तीन कक्षाओं को किस प्रकार पढ़ाया जा सकता है।
- **संसाधनों का प्रावधान:** स्कूलों को ऐसी सहायक सामग्री (TLM) दी जाए जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रेरित करे।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) और बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-FS 2022) दोनों ही लचीले शिक्षण और बच्चों की स्थानीय भाषा को प्राथमिकता देते हैं। बहु-स्तरीय कक्षाओं का सही प्रबंधन वास्तव में इन राष्ट्रीय लक्ष्यों को ज़मीनी स्तर पर उतारने का सबसे व्यावहारिक तरीका है।

बहु-स्तरीय कक्षाएँ भारतीय शिक्षा की रीढ़ हैं। अगर हम इन्हें सही सम्मान, सही योजना और सही संसाधन दें, तो ये कक्षाएँ बच्चों के लिए सीखने के सबसे सुंदर और प्रभावी केंद्र बन सकती हैं। आइए, हम इस वास्तविकता को गले लगाएं और अपने शिक्षकों को वह सहारा दें जिसकी उन्हें वास्तव में जरूरत है।

लेखक परिचय:
संजय गुलाटी वर्त्तमान में एक सीनियर स्पेशलिस्ट (बहुभाषी शिक्षा) के रूप में लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन में कार्यरत हैं, जिन्हें शिक्षा के क्षेत्र में 25 से अधिक वर्षों का समृद्ध अनुभव प्राप्त है। उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। संजय गुलाटी को 15 वर्षों का शिक्षण अनुभव है, जिसमें उन्होंने गणित तथा प्रोग्रामिंग भाषाओं का अध्यापन किया है। उन्होंने एनसीईआरटी (DESM) के साथ मिलकर ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर GeoGebra के माध्यम से ज्यामिति किट के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
उन्होंने आईसीआईसीआई फ़ाउंडेशन फ़ॉर इन्क्लूसिव ग्रोथ (IFIG) में कोऑर्डिनेटर, टीचर एजुकेशन के रूप में कार्य करते हुए SCERT के सहयोग से छत्तीसगढ़ के चार जिलों के 100 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक थीमैटिक अप्रोच को सफलतापूर्वक लागू किया। इसी दौरान उन्होंने छत्तीसगढ़ के बस्तर ज़िले की धुर्वा जनजाति के लिए बहुभाषी शिक्षा (MLE) के कार्यक्रमों को भी लागू किया।
उनके कार्य का एक प्रमुख पक्ष समुदाय के ज्ञान को विद्यालयी पाठ्यक्रम से जोड़ना रहा है, जिसके अंतर्गत कहानी उत्सव (Story Telling Festival), स्कूल–समुदाय संग्रहालय, गाँव के इतिहास का दस्तावेज़ीकरण, मौखिक भाषा का संकलन तथा एथ्नो-मैथमैटिक्स जैसे नवाचारी प्रयास किए गए।